झारखंड में युवाओं की कृषि से दूरी और उसके सामाजिक-आर्थिक परिणाम

[1]डॉ. सरोज कुमार तिवारी
[2]डॉ. अनिल कुमार

शोध सार

यह शोधपत्र झारखंड राज्य में युवाओं के कृषि-क्षेत्र से दूर होने के कारणों, इसके सामाजिक एवं आर्थिक परिणामों तथा संभावित नीति-सुझावों का विश्लेषण प्रस्तुत करता है। अध्ययन में द्वितीयक एवं प्राथमिक स्रोत का उपयोग किया गया है। निष्कर्ष दर्शाते हैं कि कम आय, लघु भूमिहीनता, कृषि का निचला सामाजिक मान-दबाव, सीमित बाजार/बुनियादी सुविधाएँ, और बेहतर शहरी रोजगार-आकांक्षाएँ युवा वर्ग को कृषि से अलग कर रही हैं; जिसका परिणाम कृषि कार्यक्षमता पर दीर्घकालिक प्रभाव, ग्रामीण असमानता, तथा लिंग-आधारित कार्यभार के बढ़ने के रूप में उभरता है। नीति-सुझावों में युवाओं के लिए आकर्षक कृषि-उद्यमिता मॉडल, कौशल-विकास, बाजार पहुँच, और सामाजिक सुरक्षा के उपाय शामिल हैं।

मूल शब्द ; कृषि, युवा ,सामाजिक-आर्थिक परिणाम,झारखंड, कृषि-उद्यमिता।

Corresponding author

[1]HOD, Department of Economics Vananchal College Tandwa, Chatra Jharkhand.

परिचय

स्वतंत्रता के बाद भारत की आर्थिक नीतियों में औद्योगीकरण और शहरीकरण को प्राथमिकता दी गई, जिसके परिणामस्वरूप कृषि क्षेत्र धीरे-धीरे पिछड़ता गया। झारखंड, जहाँ भूमि का आकार छोटा, संसाधन सीमित और कृषि वर्षा-आधारित है, वहाँ कृषि युवाओं के लिए लाभकारी विकल्प नहीं रह गया। हाल के वर्षों में प्रवासन, बेरोजगारी और कृषि की अनिश्चितता ने युवाओं को शहरों की ओर धकेला है।

झारखंड भारत का एक प्रमुख खनिज एवं प्राकृतिक संसाधनों से सम्पन्न राज्य है, परंतु इसकी अधिकांश जनसंख्या आज भी ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती है और कृषि पर प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से निर्भर है। राज्य के कुल श्रमबल का लगभग 65-70 प्रतिशत हिस्सा कृषि एवं उससे संबंधित गतिविधियों में संलग्न है (कृषि विभाग, झारखंड, 2021)। इसके बावजूद, पिछले दो दशकों में झारखंड के ग्रामीण युवाओं में कृषि के प्रति रुचि में तीव्र गिरावट देखी गई है। यह प्रवृत्ति राज्य की सामाजिक-आर्थिक संरचना के लिए गम्भीर चुनौती बन चुकी है, क्योंकि कृषि केवल आजीविका का साधन ही नहीं बल्कि ग्रामीण समाज का सांस्कृतिक एवं पारिवारिक आधार भी है।

भारत में हरित क्रांति के बाद जहाँ पंजाब, हरियाणा, पश्चिमी उत्तर प्रदेश जैसे राज्यों में कृषि उत्पादन में उल्लेखनीय वृद्धि हुई, वहीं झारखंड जैसे पर्वतीय और आदिवासी बहुल राज्यों में कृषि अपेक्षाकृत पिछड़ी रह गई। झारखंड की कृषि मुख्यतः वर्षा आधारित, सीमांत भूमि और पारंपरिक तकनीक पर निर्भर रही है। राज्य के अधिकांश जिलों—गोड्डा, पलामू, गढ़वा, लातेहार, गिरिडीह, खूंटी—में औसत जोत आकार 0.75 हेक्टेयर से भी कम है (Directorate of Agriculture, Jharkhand, 2021)। इस सीमित भूमि पर उत्पादन क्षमता घटने के साथ-साथ लाभप्रदता भी कम हुई है, जिससे युवा वर्ग का मोहभंग होना स्वाभाविक है।

युवाओं का कृषि से विमुख होना केवल आर्थिक कारणों से नहीं, बल्कि सामाजिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से भी गहन है। पारंपरिक कृषि को अब युवा वर्ग "कम सम्मानजनक" एवं "कठिन परिश्रम वाला" कार्य मानने लगा है। शिक्षा और सूचना प्रौद्योगिकी के प्रसार के साथ युवाओं के जीवन-मूल्य एवं आकांक्षाएँ बदल रही हैं। वे अब कृषि के स्थान पर शहरी जीवन, औद्योगिक कार्य, ठेका मजदूरी या निजी क्षेत्र की नौकरियों को अधिक आकर्षक विकल्प के रूप में देखते हैं।

यह स्थिति कई सामाजिक-आर्थिक परिणाम उत्पन्न कर रही है। सबसे पहले, कृषि श्रम की कमी से ग्रामीण उत्पादन घट रहा है, जिससे खाद्य सुरक्षा पर सीधा प्रभाव पड़ता है। दूसरे, युवाओं के पलायन से गाँवों में वृद्ध और महिला आबादी का अनुपात बढ़ रहा है। इससे "feminization of agriculture" की प्रवृत्ति देखी जा रही है, जहाँ महिलाएँ खेतों में मुख्य श्रमशक्ति बन रही हैं लेकिन उन्हें पर्याप्त संसाधन, तकनीकी ज्ञान या निर्णय लेने का

अधिकार नहीं है। तीसरे, युवाओं की अनुपस्थिति से गाँवों की सामुदायिक एकजुटता और सामाजिक पूँजी कमजोर हो रही है।

आर्थिक दृष्टि से देखें तो झारखंड का कृषि क्षेत्र राज्य के सकल घरेलू उत्पाद (GSDP) में केवल 14% योगदान देता है (Jharkhand Economic Survey, 2023), जबकि इस क्षेत्र में कार्यरत आबादी 65% से अधिक है। इसका अर्थ है कि कृषि अब रोजगार तो दे रही है, पर आय एवं जीवन-स्तर में पर्याप्त सुधार नहीं ला पा रही। युवा वर्ग इस असंतुलन को समझ रहा है और वैकल्पिक पेशों की ओर रुख कर रहा है। परंतु यह प्रवृत्ति दीर्घकाल में राज्य की ग्रामीण अर्थव्यवस्था और खाद्य सुरक्षा के लिए गंभीर खतरा बन सकती है।

कृषि से युवाओं की दूरी का एक अन्य आयाम है – *तकनीकी असमानता*। जहाँ देश के कई राज्यों में ड्रिप इरिगेशन, मशीनीकरण, जैविक खेती और ई-नाम जैसी प्रणालियाँ अपनाई जा रही हैं, वहीं झारखंड में इन तकनीकों का प्रसार अत्यंत सीमित है। खेतों में पारंपरिक औजारों का प्रयोग, असमय वर्षा और फसल बीमा की जटिल प्रक्रिया युवाओं को निराश करती है। इसके अतिरिक्त, मार्केटिंग चैनल की कमी और बिचौलियों का दबदबा किसानों को न्यूनतम मूल्य पर फसल बेचने को विवश करता है।

सांस्कृतिक रूप से भी झारखंड में भूमि का महत्व अत्यधिक है। आदिवासी समाज में भूमि केवल उत्पादन का साधन नहीं, बल्कि पहचान और परंपरा का प्रतीक है। परन्तु भूमि खंडन, अवैध अधिग्रहण और पारिवारिक विवादों के कारण कई परिवार खेती से बाहर हो रहे हैं। ऐसी स्थिति में युवा वर्ग कृषि के प्रति न केवल आर्थिक, बल्कि भावनात्मक दूरी भी महसूस कर रहा है।

अतः इस शोध-पत्र का उद्देश्य झारखंड में युवाओं के कृषि से विमुख होने के प्रमुख कारणों का विश्लेषण करना, उसके सामाजिक-आर्थिक परिणामों को समझना तथा नीति-निर्माताओं के लिए संभावित समाधान प्रस्तुत करना है। यह अध्ययन प्राथमिक सर्वेक्षण और द्वितीयक आंकड़ों दोनों पर आधारित है ताकि राज्य की वास्तविक स्थिति का समग्र मूल्यांकन किया जा सके।

साहित्य समीक्षा

भारत में ग्रामीण युवाओं की कृषि के प्रति उदासीनता का उल्लेख अनेक अध्ययनों में हुआ है। *नेशनल सैंपल सर्वे ऑर्गेनाइजेशन (NSSO, 2021)* की रिपोर्ट के अनुसार, 15–35 वर्ष के आयु वर्ग के लगभग 40% युवा कृषि को दीर्घकालीन करियर के रूप में नहीं देखना चाहते। इसका प्रमुख कारण कम आय, अनिश्चित मौसम, भूमि का खंडन और कृषि कार्यों की कठिन प्रकृति बताया गया है।

Deshpande (2018) ने अपने अध्ययन में पाया कि युवा किसान पारिवारिक दबाव में कृषि करते हैं, लेकिन यदि उन्हें वैकल्पिक रोजगार का अवसर मिले तो वे तुरंत इस क्षेत्र को छोड़ देते हैं।

Singh & Sharma (2019) के अनुसार, भारत के उत्तर-पूर्वी और मध्य राज्यों में कृषि को "subsistence activity" के रूप में देखा जाता है, न कि उद्यम के रूप में। इसलिए युवा वर्ग इसमें नवाचार या पूंजी निवेश की मानसिकता नहीं रखता।

झारखंड राज्य की अर्थव्यवस्था मुख्यतः खनिज और कृषि पर आधारित है। *झारखंड आर्थिक सर्वेक्षण (2023)* के अनुसार, राज्य की लगभग 67% आबादी प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से कृषि पर निर्भर है, किंतु राज्य के सकल घरेलू उत्पाद (GSDP) में कृषि का योगदान केवल 14% है। यह असंतुलन युवाओं के मोहभंग का मुख्य कारण है।

Gupta (2020) के अध्ययन में पाया गया कि झारखंड के ग्रामीण युवाओं में खेती के प्रति अरुचि के पीछे दो प्रमुख कारण हैं – भूमि की कमी और लाभप्रदता का अभाव। सर्वेक्षण के अनुसार, 65% युवाओं का मानना था कि "खेती में मेहनत ज़्यादा और आमदनी कम है।" वहीं, 42% युवाओं ने कृषि में सरकारी सहायता या प्रशिक्षण के अभाव को मुख्य समस्या बताया।

Jharkhand Agriculture Department (2022) की रिपोर्ट दर्शाती है कि राज्य में 80% खेती वर्षा पर निर्भर है। सिंचाई सुविधाओं की कमी, औसत जोत आकार में गिरावट और आधुनिक उपकरणों की अनुपलब्धता ने युवाओं की कृषि में रुचि घटाई है।

कई शोध बताते हैं कि शिक्षा और कृषि के बीच एक जटिल संबंध है। *Mishra (2017)* के अनुसार, शिक्षा प्राप्त करने के बाद ग्रामीण युवा गैर-कृषि क्षेत्रों की ओर प्रवृत्त होते हैं क्योंकि वे कृषि को "कम प्रतिष्ठा वाला पेशा" मानते हैं।

National Youth Policy (2014) भी इस प्रवृत्ति की पुष्टि करती है कि शिक्षित युवाओं में शहरी प्रवासन की प्रवृत्ति अधिक है। झारखंड में यह प्रवृत्ति विशेष रूप से संथाल परगना, पलामू और गढ़वा जैसे जिलों में स्पष्ट देखी जाती है, जहाँ 18–35 वर्ष के युवाओं का 55% से अधिक भाग राज्य से बाहर प्रवास करता है (NSSO, 2021)।

Das (2021) ने अपने अध्ययन में झारखंड के ग्रामीण युवाओं के बीच यह पाया कि रोजगार के अवसरों की कमी, परिवार की आर्थिक अस्थिरता और शहरी जीवन की आकांक्षा उन्हें कृषि से दूर कर रही है। यह प्रवासन ग्रामीण समाज की पारंपरिक संरचना को भी प्रभावित कर रहा है।

युवाओं की कृषि से दूरी के परिणाम केवल उत्पादन में कमी तक सीमित नहीं हैं, बल्कि इसके गहरे सामाजिक प्रभाव भी हैं। *Verma (2020)* ने यह बताया कि ग्रामीण इलाकों से युवाओं के पलायन से कृषि श्रम की कमी, वृद्धजन निर्भरता और महिलाओं पर कार्यभार में वृद्धि हुई है। इसे "feminization of agriculture" की संज्ञा दी गई है।इसके साथ ही, *Pandey & Roy (2019)* के अध्ययन में पाया गया कि कृषि से दूरी बढ़ने पर ग्रामीण क्षेत्रों में खाद्य सुरक्षा, पोषण स्तर और सामुदायिक एकजुटता में गिरावट आती है।

आर्थिक दृष्टि से, युवाओं के पलायन से स्थानीय बाजार कमजोर होते हैं। कृषि उपज में गिरावट के कारण राज्य के खाद्य उत्पादन और आत्मनिर्भरता पर असर पड़ता है। *Planning Commission of India (2013)* के अनुसार, झारखंड में 40% से अधिक परिवार खाद्य असुरक्षा से ग्रस्त हैं, जिसका एक कारण कृषि श्रमबल में कमी भी है।

विभिन्न अध्ययनों ने सुझाव दिया है कि यदि कृषि को तकनीकी, उद्यमशील और लाभकारी क्षेत्र के रूप में पुनर्गठित किया जाए, तो युवाओं को पुनः जोड़ा जा सकता है। *FAO (2019)* ने अपने "Youth and Agriculture" रिपोर्ट में कहा कि कृषि को आधुनिक तकनीक, डिजिटल प्लेटफॉर्म, स्टार्टअप्स और एग्री-बिजनेस मॉडल के साथ जोड़ना ही युवाओं को पुनः आकर्षित करने का एकमात्र उपाय है।

ICAR (2022) की पहल "ARYA – Attracting and Retaining Youth in Agriculture" ने यह सिद्ध किया कि जब युवाओं को कृषि में प्रशिक्षण, वित्तीय सहायता और बाज़ार सुविधा दी जाती है, तो उनकी सहभागिता में

उल्लेखनीय वृद्धि होती है। झारखंड के रांची, खूंटी और गिरिडीह जिलों में चलाए गए ARYA कार्यक्रम के प्रारंभिक परिणामों में यह पाया गया कि लगभग 28% युवा फिर से कृषि से जुड़ने के इच्छुक हैं।

6. अनुसंधान की खामियाँ (Research Gaps)

अब तक के अधिकांश अध्ययनों में झारखंड के सामाजिक-सांस्कृतिक पहलुओं को पर्याप्त रूप से नहीं समझा गया है। राज्य की आदिवासी और ग्रामीण संरचना अन्य राज्यों से भिन्न है — जहाँ भूमि केवल आजीविका नहीं, बल्कि पहचान और परंपरा का प्रतीक भी है। अतः कृषि से युवाओं की दूरी केवल आर्थिक नहीं, बल्कि सांस्कृतिक और मानसिक परिवर्तन का संकेत भी है।
इसके अलावा, अभी तक इस विषय पर व्यापक *प्राथमिक सर्वेक्षण आधारित अध्ययन* सीमित हैं। अधिकांश अध्ययन द्वितीयक आंकड़ों या सामान्य राष्ट्रीय स्तर पर आधारित हैं। अतः यह शोध इस शून्य को भरने का प्रयास करेगा।

अनुसंधान कार्यप्रणाली (Research Methodology)

इस शोध में मुख्य रूप से प्राथमिक डेटा (Primary Data) का उपयोग किया गया है। प्राथमिक डेटा का संग्रह झारखंड राज्य के चयनित पाँच जिलों — *रांची, गढ़वा, दुमका, गिरिडीह* और *पलामू* — से किया गया। प्रत्येक जिले से 50 युवाओं का चयन *यादृच्छिक नमूना (Random Sampling)* पद्धति द्वारा किया गया, जिससे कुल 250 उत्तरदाता शामिल हुए।

डेटा संग्रह के लिए एक संरचित प्रश्नावली (Structured Questionnaire) तैयार की गई, जिसमें सामाजिक-आर्थिक स्थिति, शिक्षा स्तर, कृषि के प्रति दृष्टिकोण, प्रवासन प्रवृत्ति और भविष्य की आजीविका संबंधी प्रश्न शामिल थे। साक्षात्कार प्रत्यक्ष रूप से गाँवों में जाकर किए गए तथा कुछ प्रतिक्रियाएँ ऑनलाइन माध्यम से प्राप्त की गईं।संग्रहित आंकड़ों का विश्लेषण वर्णनात्मक सांख्यिकीय विधियों के माध्यम से किया गया। साथ ही, युवाओं की कृषि से दूरी और सामाजिक-आर्थिक प्रभावों के बीच संबंध को समझने के लिए गुणात्मक व्याख्या (Qualitative Interpretation) की गई।यह प्राथमिक सर्वेक्षण झारखंड के ग्रामीण युवाओं की वास्तविक स्थिति, उनकी सोच और कृषि से उनके संबंध को प्रत्यक्ष रूप से समझने का आधार प्रदान करता है।

इस शोध में एकत्रित प्राथमिक आंकड़ों का विश्लेषण झारखंड के पाँच जिलों – *रांची, गढ़वा, दुमका, गिरिडीह* और *पलामू* – के 250 ग्रामीण युवाओं के उत्तरों के आधार पर किया गया है। विश्लेषण का उद्देश्य यह समझना है कि युवा वर्ग कृषि से क्यों दूर हो रहा है और इसका उनके सामाजिक एवं आर्थिक जीवन पर क्या प्रभाव पड़ रहा है।

1. उत्तरदाताओं की सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि

सर्वेक्षण में शामिल 250 युवाओं में से 68% पुरुष और 32% महिलाएँ थीं। आयु वर्ग के अनुसार, 45% उत्तरदाता 18–25 वर्ष, 38% 26–35 वर्ष और शेष 17% 35 वर्ष से अधिक के थे।
शैक्षणिक स्थिति से पता चला कि 52% युवाओं ने स्नातक या उससे अधिक शिक्षा प्राप्त की थी, जबकि केवल 18% युवाओं ने माध्यमिक स्तर तक की पढ़ाई की थी। यह तथ्य यह दर्शाता है कि झारखंड में ग्रामीण युवा अब शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं, परंतु वे कृषि को अपना करियर नहीं बनाना चाहते।

2. कृषि के प्रति दृष्टिकोण और सहभागिता

सर्वेक्षण से प्राप्त आंकड़ों के अनुसार –

- केवल **24% युवा** वर्तमान में किसी न किसी रूप में कृषि कार्य में संलग्न हैं।
- **61% युवाओं** ने स्पष्ट रूप से कहा कि वे "खेती को लाभकारी पेशा नहीं मानते।"
- **43% उत्तरदाताओं** ने बताया कि उनके परिवार की कृषि भूमि इतनी सीमित है कि उससे आर्थिक रूप से टिकाऊ जीवन संभव नहीं।
- **32% युवाओं** का कहना था कि आधुनिक कृषि तकनीक, सिंचाई और बाजार की कमी उन्हें हतोत्साहित करती है।

यह दर्शाता है कि युवाओं की कृषि से दूरी केवल व्यक्तिगत पसंद नहीं, बल्कि संरचनात्मक समस्याओं – जैसे संसाधन की कमी, बाजार असंतुलन और सरकारी योजनाओं की अप्रभावशीलता – का परिणाम है।

3. प्रवासन और वैकल्पिक रोजगार प्रवृत्ति

सर्वेक्षण के अनुसार, **57% युवाओं** ने पिछले पाँच वर्षों में किसी न किसी रूप में *राज्य के बाहर रोजगार* की तलाश की है। प्रवासन का प्रमुख कारण बेहतर आय (42%), स्थायी नौकरी की खोज (29%) और कृषि से असंतोष (19%) पाया गया।
रांची और पलामू जिलों में यह प्रवृत्ति सबसे अधिक देखी गई। प्रवास करने वाले युवाओं में 63% शहरी असंगठित क्षेत्र (निर्माण, ट्रांसपोर्ट, होटल आदि) में कार्यरत हैं। यह ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि श्रम की कमी को बढ़ा रहा है।

4. सामाजिक परिणाम

कृषि से युवाओं की दूरी का स्पष्ट प्रभाव ग्रामीण सामाजिक ढाँचे पर देखा गया।

- 54% उत्तरदाताओं ने बताया कि *गाँवों में बुजुर्ग और महिलाएँ ही खेती संभाल रही हैं*।
- 47% ने स्वीकार किया कि युवाओं के पलायन से सामुदायिक सहयोग और पारिवारिक एकजुटता कम हुई है।
- महिलाएँ कृषि कार्य में मुख्य श्रमशक्ति बन चुकी हैं, परंतु उन्हें निर्णय लेने का अवसर नहीं मिलता – इसे “कृषि का नारीकरण” (Feminization of Agriculture) कहा जा सकता है।

5. आर्थिक परिणाम

आर्थिक दृष्टि से, 58% उत्तरदाताओं ने बताया कि उनके गाँवों में कृषि उत्पादन में कमी आई है। औसतन प्रति परिवार कृषि से वार्षिक आय ₹45,000 से कम रही।
70% युवाओं ने कहा कि खेती छोड़ने के बाद भी वे वैकल्पिक व्यवसायों में आर्थिक रूप से स्थिर नहीं हो पाए हैं। इससे यह स्पष्ट है कि कृषि से दूरी ने न तो युवाओं की आर्थिक स्थिति में सुधार किया और न ही ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सशक्त किया।

6. नीति संबंधी निष्कर्ष

विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकलता है कि झारखंड में युवाओं की कृषि से दूरी के मूल कारण हैं –

1. सीमांत भूमि और कम लाभप्रदता
2. आधुनिक तकनीक और बाजार की कमी
3. सरकारी योजनाओं की सीमित पहुँच
4. रोजगार और शिक्षा में असंतुलन
5. सामाजिक प्रतिष्ठा का अभाव

इन कारणों को दूर करने हेतु कृषि को *"रोजगारोन्मुख उद्यम"* के रूप में विकसित करना आवश्यक है। युवाओं को एग्री-बिजनेस, जैविक खेती, मूल्य संवर्धन (value addition) और ग्रामीण स्टार्टअप्स से जोड़ना इस प्रवृत्ति को उलट सकता है।

निष्कर्ष

इन परिस्थितियों में यह आवश्यक है कि कृषि को केवल परंपरागत पेशा न मानकर *"उद्यम" (enterprise)* के रूप में पुनर्परिभाषित किया जाए। सरकार, शिक्षण संस्थान और सामाजिक संगठन मिलकर युवाओं को कृषि-आधारित स्टार्टअप, जैविक खेती, फूड प्रोसेसिंग, एग्री-टूरिज़्म आदि से जोड़ सकते हैं। यदि कृषि को तकनीक, पूँजी और सम्मान के साथ आधुनिक स्वरूप में प्रस्तुत किया जाए, तो युवा वर्ग पुनः इस क्षेत्र की ओर आकर्षित हो सकता है।

संदर्भ (References)

1. Deshpande, R. (2018). *Youth in Agriculture: Declining Trend and Challenges in India*. Economic & Political Weekly, 53(22).
2. Singh, K. & Sharma, P. (2019). *Agrarian Transformation and Youth in Rural India*. Journal of Rural Development, 38(3), 211–225.
3. Jharkhand Economic Survey (2023). Government of Jharkhand, Department of Finance.
4. Gupta, S. (2020). *Rural Youth and Agricultural Crisis in Jharkhand*. Ranchi University Journal of Social Studies, 5(2).

5. Mishra, P. (2017). *Education and Youth Migration in Eastern India*. Indian Journal of Population Studies, 42(4).

6. Das, R. (2021). *Youth Migration and Rural Livelihood in Jharkhand*. Journal of Social and Economic Policy, 19(1).

7. Verma, A. (2020). *Feminization of Agriculture in Jharkhand*. Economic & Political Weekly, 55(16).

8. Pandey, A. & Roy, S. (2019). *Food Security and Rural Labour in Eastern India*. Indian Economic Review, 64(2).

9. FAO (2019). *Youth and Agriculture: Key Challenges and Opportunities*. Food and Agriculture Organization of the United Nations.

10. ICAR (2022). *Attracting and Retaining Youth in Agriculture (ARYA) Programme Annual Report*.

11. **कृषि विभाग, झारखंड (2021). *वार्षिक कृषि रिपोर्ट*. रांची: झारखंड सरकार।**

12. **National Sample Survey Office (NSSO, 2021). *Employment and Unemployment Situation in India, 78th Round*. नई दिल्ली।**

13. **Directorate of Agriculture, Jharkhand (2021). *Statistical Abstract of Agriculture*. Ranchi।**

14. **Jharkhand Economic Survey (2023). *Government of Jharkhand, Department of Finance*.**

15. **Kumar, A. & Singh, R. (2020). *Youth Migration and Agricultural Decline in Jharkhand*. *Economic & Political Weekly*, 55(14): 35–42।**